[This question paper contains 6 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 2502 **JC**

Unique Paper Code : 12051302

Name of the Paper : हिन्दी कविता (आधुनिक काल-छायावाद तक)

Name of the Course : B.A. (H) हिन्दी CBCS

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (8)

(क) प्रियतम् तुम श्रुति-पथ से आये।
तुम्हें हृदय में रख कर मैंने अधर-कपाट् लगाये।
मेरे हास-विलास! किन्तु क्या भाग्य तुम्हें रख पाये ?
दृष्टि मार्ग से निकल गये ये तुम रसमय मनभाये!
प्रियतम तुम श्रुति-पथ से आये।

P.T.O.

अथवा

स्नेह-निर्झर बह गया है।

रेत ज्यों तन रह गया है।

आम की यह डाल जो सूखी दिखी,

कह रही है- "अब यहाँ पिक या शिखी

नहीं आते, पंक्ति मैं वह हूँ लिखी

नहीं जिसका अर्थ

जीवन दह गया है।"

(ख) 'हित-वचन नहीं तूने माना, मैत्री का मूल्य न पहचाना, (7

तो ले, मैं भी अब जाता हूँ, अन्तिम संकल्प सुनाता हूँ।

याचना नहीं, अब रण होगा,

जीवन-जय या कि मरण होगा।

अथवा

यहीं कहीं पर बिखर गयी वह

भग्न विजय-माला-सी।

उसके फूल यहाँ संचित हैं

यह स्मृति-शाला सी ।।

सहे वार पर वार अन्त तक

लड़ी वीर बाला-सी

आहुति-सी गिर चढ़ी चिता पर

चमक उठी ज्वाला-सी ।।

2. 'यशोधरा' को केन्द्र में रखते हुए मैथिलीशरण गुप्त की नारी-विषयक दृष्टि पर प्रकाश डालिए। (12)

(7)

अथवा

'यशोधरा' की भाषागत् विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

3. 'लहर' में व्यक्त जयशंकर प्रसाद के काव्य-सौन्दर्य का विवेचन कीजिए।

(12)

अथवा

'अरी वरुणा की शांत कछार' का प्रतिपाद्य लिखिए।

4. पाठ्यक्रम में निर्धारित कविताओं के आधार पर निराला की काव्य-प्रवृत्ति पर विचार कीजिए। (12

अथवा

'तोड़ती पत्थर' कविता की मूल-संवेदना पर प्रकाश डालिए।

5. 'रश्मिरथी' के आधार पर कृष्ण-कर्ण संवाद का विवेचन कीजिए। (12)

अथवा

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं का वैशिष्ट्य स्पष्ट कीजिए।

6. दिए गए निर्देशों के आधार पर किन्हीं **दो** काव्यांशों का रचना-कौशल लिखिए: (6+6)

(क) सुधा-धार यह नीरस दिल की
मस्ती मगन तपस्वी की।
जीवन-ज्योति नष्ट नयनों की
सच्ची लगन मनस्वी की।।

बीते हुए बालपन की यह

क्रीड़ा पूर्ण वाटिका है ।।

वही मचलना वही किलकना

हँसती हुई नाटिका है।। (वात्सल्य - वर्णन)

(ख) काट अन्ध - उर के बन्धन - स्तर

वहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर,

कलुष - भेद - तम हर प्रकाश भर

जगमग जग कर दे ।

नव गति, नव लय, ताल - छन्द नव,

नवल कण्ठ, नव जलद - मन्द्र रव;

नव नभ के नव विहग - वृन्द को

नव पर, नव स्वर दे! (भाव - सौन्दर्य)

(ग) वसुधा पर ओस बने बिखरे

हिमकन आँसू जो क्षोभ भरे

उषा बटोरती अरुण गात!

अब जागो जीवन के प्रभात!

तम-नयनों की तारायें सब-

मुँद रही किरण दल में है अब,

चल रहा सुखद यह मलय वात!

अब जागो जीवन के प्रभात! (शिल्प-स